स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड
पीएच.डी. (हिंदी) उपाधि हेतु प्रस्तुत
शोध-प्रबंध की रुपरेखा

गुलज़ार के बाल साहित्य का समीक्षात्मक अनुशीलन

❖ शोध कर्ता ❖

क्रांती नारायणराव सपाटे
एम.ए. (हिंदी) बी.एड. एम.फिल. नेट

❖शोध - निदेशक ❖

डॉ. मुकुंद कवडे
सहाय्यक प्राध्यापक
हिंदी विभाग एवं अनुसंधान केंद्र
पीपल्स कॉलेज, नांदेड

मई २०१९

‘गुलज़ार के बाल साहित्य का समीक्षात्मक अनुशीलन’

हिंदी साहित्य की परीधि अधिक व्यापक एवं विस्तृत दिखाई देती है | आज तक खोज के लिए ढेर सारे विषयों का चयन किया गया है | इसमें नाटक, उपन्यास, कहानी, गज़ल, शायरी आदि साहित्य में नारी पुरुष प्रधान संबंधी नाटकों , उपन्यासों संबंधी खोज कार्य हो चुका है, किंतु बालसाहित्य पर अधिक तौर पर खोज नही हुई है | इसे केंद्र रुप में मानकर मैंने अपने खोज के लिए **‘गुलज़ार के बालसाहित्य का समीक्षात्मक अनुशीलन’** इस विषय का चयन किया है |

बालसाहित्य की परंपरा तो हमें समृध्द रुप में मिलती है | बालसाहित्य में वह समस्त साहित्य आता है जो बच्चों के मानसिक और शारीरिक स्तर को ध्यान में रखते हुए लिखा गया है | बालसाहित्य में मन को लुभावनेवाली आसान भाषा में लिखी हुई कहानियाँ, कविताएँ, बालगीत प्रमुख रुप से दिखाई देते हैं | इसके अलावा छोटे-छोटे नाटक तथा छोटी लघुकथाएँ, फिल्में भी दिखाई देती है | इस बालसाहित्य में सामाजिक के साथ-साथ वीरता, नैतिकता एवं परंपरा की शिक्षा भी दी जाती है | अब तक बालसाहित्य का विषय उपेक्षित रहा है | इस और हिंदी साहित्य जगत उतना ध्यान नहीं दे पाया जितना देना चाहिए | साथ ही मेरी रुचि भी बालसाहित्य को लेकर अधिक रही हैं | इसीलिए मैंने इस विषय का चयन अनुसंधान के लिए किया है |

हिंदी और उर्दु साहित्य में गुलज़ार एक बहुत बडा नाम है | ‘पृखराज’ और ‘त्रिवेणी’ जैसी कृतियाँ उन्हे कालजयी साहित्यकार भी साबित करती है | बच्चों के लिए जितना काम गुलज़ार साहब का हैं, उतना शायद ही किसी का हो सकता है | ‘बोसकी का पंचतंत्र’ जैसी नायाब कृति भारतीय बाल साहित्य में अहम स्थान रखती है |

प्रस्तुत शोध प्रबंध को सात अध्यायों में विभाजित किया गया है | वह इस प्रकार

‘ गुलज़ार के बालसाहित्य का समीक्षात्मक अनुशीलन’

विषयानुक्रमणिका

प्रथम अध्याय	**:**	अनुसंधान की प्रविधि
द्वितीय अध्याय	**:**	बालसाहित्य : अर्थ, स्वरुप, एवं महत्त्व
तृतीय अध्याय	**:**	हिंदी में बालसाहित्य की परंपरा
चतुर्थ अध्याय	**:**	गुलज़ार का जीवन एवं साहित्यिक परिचय
पंचम अध्याय	**:**	गुलज़ार के बालसाहित्य का समीक्षात्मक अनुशीलन
षष्ठम अध्याय	**:**	गुलज़ार के बालसाहित्य की भाषाशैली
सप्तम अध्याय	**:**	उपसंहार

प्रथम अध्याय

अनुसंधान की प्रविधि

इस अध्याय में अनुसंधान की प्रविधि को स्पष्ट किया जाएगा | अनुसंधान (Research) किसी भी क्षेत्र में ज्ञान की खोज करना होता है | मनुष्य की जानने की आंतरिक जिज्ञासा सदा से ही खोज का कारण बनती रही है | जब से मनुष्य ने चेतना पायी है तब से अनुमान और खोज दो ऐसे तत्त्व उसके मस्तिष्क में विदयमान रहे हैं जो उसके लिये निरंतर नविनता के अन्वेशन का आधार बनते हैं |

अनुसंधान या शोध किसी भी साहित्यिक विषय का ऐसा सर्वांगीण सुव्यवस्थीत अनुशीलन होता है जिसमें शोधार्थी किसी विशिष्ट शोध को लक्ष्य करते हुए उपलब्ध तथ्यों का निरीक्षण, परीक्षण तथा समुचित व्याख्या करता है | तथ्यों से सत्य तक पहुँचने की एक विशिष्ट प्रक्रिया है जिसे सामान्यतः अनुसंधान की प्रविधि कहा जाता है | आज साहित्यिक शोध का क्षेत्र विस्तृत हुआ है |

अनुसंधान की प्रविधि के अंतर्गत परिकल्पना, शोध पद्ध्दति , शोध के लिए विषय-चयन, सामग्री संकलन, अनुसंधान का महत्त्व, अनुसंधान के प्रकार इन सभी बातों का विश्लेषण इस अध्याय में किया जाएगा |

द्वितीय अध्याय

बाल साहित्य : अर्थ, स्वरुप एवं महत्त्व

इस अध्याय में बाल साहित्य का अर्थ, स्वरुप तथा महत्व पर प्रकाश डाला जाएगा | बाल साहित्य के अर्थ में विचारकों की परिभाषाएँ, साहित्यकारों का मत तथा गुलजार जी ने लिखा हुआ बाल-साहित्य का अर्थ प्रस्तुत किया जाएगा | बाल साहित्य के स्वरुप पर विचार किया जाऐगा | साथ ही साथ आज के युग में व्यक्ति-व्यक्ति से दूर जा रहा है | अपनत्व की भावना मनुष्य में कम होती जा रही है | परिणाम स्वरुप संयुक्त परिवार विभक्त रुप में बँटता जा रहा है | जिसके कारण बच्चों को दादा-दादी के साथ साथ माता-पिता, का

प्रेम भी नहीं मिल पा रहा है | इसी कारण अपनत्व की भावना मिटती जा रही है | इसे ध्यान में रखते हुए साहित्यकारों ने अपने साहित्य में इन बातों का महत्व स्पष्ट किया है | इसी का अध्ययन समग्र रुप में इस अध्याय में किया जाएगा |

तृतीय अध्याय

हिंदी बाल साहित्य की परंपरा

इस अध्याय में हिंदी बाल-साहित्य की परंपरा को स्पष्ट किया जाएगा | हिंदी में बाल साहित्य की परंपरा कब से और कोनसे इ.स. काल से शुरु की गई है | बाल साहित्य के प्रणेता किसे कहा गया है | इस संबंध में जानकारी प्रस्तुत की जाएगी |

हिंदी बालसाहित्य उपेक्षित और अपढा, अचर्चित भले ही हो, लेकिन किसी भी दृष्टि से कम महत्वपूर्ण नहीं है | बल्कि कहा जा सकता है कि आज हिंदी के पास समृध्द बाल साहित्य, विशेष रुपे से बालकविता, कथा उपलब्ध है और इसका अर्थ यह भी नहीं कि बाल साहित्य की अन्य विद्याओं मसलन कहानी, उपन्यास, नाटक, जीवनी आदि के क्षेत्र में उत्कृष्ट सामग्री उपलब्ध नही है | इसी को केंद्र मानकर मैं इस अध्याय में हिंदी बाल साहित्य की परंपरा पर प्रकाश डालने वाली हूँ |

बाल साहित्य का मूल आशय बालक के लिए सृजनात्मक साहित्य से है तो दूसरा आशय उपयोगी हैं | अनुदित कहानियाँ और मौलिक कहानियाँ भारतेंदु युग से ही उपलबध होनी शुरु हो गयी थी | शिवप्रसाद सितारे हिंद को कुछ विद्वानों ने बाल कहानी का सूत्रपात का श्रेय दिया है जैसे-राजा भोज का सपना | बाद में सुभद्राकुमारी चौहान, राम नरेश त्रिपाठी, प्रेमचंद आदि की रचनाओं के रुप में हिंदी बाल साहित्य की कहानी परंपरा का समृध्द रुप मिलता है|

स्वतंत्रता के बाद तो इस क्षेत्र में अत्यंत उल्लेखनीय प्रगति देखी जा सकती है | कविता के क्षेत्र में भी जो अद्वितीय साहित्य रचा गया है उसे ध्यान में रखते हुए स्व. जयप्रकाश भारती ने इस समय को बाल साहित्य का स्वर्णिम युग कहा था | परंपरा को खोजते हुए यह सामने आया कि सूरदास को ही बालसाहित्य का आदि गुरु माना गया है |

इस काल में सर्वेश्वर दयाल सक्सेना से विष्णु प्रभाकर, देवेंद्र कुमार, श्यामसिंह सुशिल आदि लंबी सूची है |

१९४७ से ७० तक के समय को हिंदी बाल कविता की ऊँचाइयों का समय या 'गौरव युग' माना गया है | क्योंकि प्रकाश मनु के शब्दों में इस दौर को 'गौरव युग' कहने का अर्थ यह है कि इस दौर में बालकविता में जितनी उर्जित काव्य क्षमतापूर्ण, संभावना पूर्ण और नए युग की चेतना से लेस प्रतिभाएँ मौजूद थी वे न इससे पहले थी ओर न बाद में ही नजर आती है | आदि की जानकारी प्रस्तुत अध्याय में दी जाएगी |

चतुर्थ अध्याय

गुलज़ार का जीवन एवं साहित्यिक परिचय

इस अध्याय में गुलज़ार का समस्त जीवन परिचय और कृतित्व का परिचय दिया जाएगा | गुलज़ार के व्यक्तित्व का परिचय साक्ष्य के आधार पर दिया जाएगा | उनके जीवन परिचय के अंतर्गत माता-पिता, भाई-बहन, पत्नि, बेटी, जन्मकाल, बाल्यकाल, शिक्षा, नौकरी, विवाह आदि पारिवारिक बातों की जानकारी दी जाएगी |

गुलज़ार साहित्यकार के साथ-साथ गीतकार, कवि, पटकथा, लेखक, फिल्म निर्देशक तथा नाटककार है | वह जाने माने गीतकार के रुप में जाने जाते हैं और उनकी बहुत से चर्चित गीत भी सुनने को मिलते हैं | गुलज़ार मूलतः उर्दु और पंजाबी के कवि हैं लेकिन फिल्मों के कई गानों में उन्होंने उत्तरी भारत की कई भाषाओं का प्रयोग किया हैं | उन्होंने विषयवस्तु और निर्देशन , ने उनके रचनाकार का एक और पक्ष उजागर किया है | इधर हिंदी के साहित्यिक पत्रिका ज्ञानोदय में वे नियमित रुप से लिख रहे हैं | उन्होंने बच्चों के लिए अद्वैत रचनाएँ की तथा दो दूरदर्शन धारावाहिक किरदार और मिर्जा गालिब भी बनाएँ | कविता , कहानी, फिल्मगीत और निर्देशन का यह सिलसिला उनकी अपनी अनूढी रफ्तार से जारी है | इन सभी आयामों पर इस अध्याय में प्रकाश डाला जाएगा |

गुलज़ार साहब का इतना बडा काम है कि उनके कृतित्व और व्यक्तित्व पर एक नजर डालने भर से हर कोई चकरा जाए | दरअसल गुलज़ार साहब जिस विधा में सक्रिय

हुए है, उसमें अपनी गहरी छाप छोडी है | उम्र के इस मोड पर भी न तो उनकी कलम रुकती है और न ही उन पर लिखनेवालों की कलम रुक सकती है | किसी संत की तरह गुलज़ार चुपचाप अपने आपमें मगन रहते हैं |

पंचम अध्याय

गुलज़ार के बालसाहित्य का समीक्षात्मक अनुशीलन

इस अध्याय में साहित्यकार गुलज़ारजी के बाल साहित्य का अनुशीलन किया जाएगा | गुलज़ार जी ने अपने साहित्य में बालकों को केंद्र मानकर रचनाएँ की जिसमें उन्होने बालमन को लुभावनेवाली है कहानी कविताएँ नाटक, आदि लिखे है |

कविताएँ बोसकी का पंचतंत्र (पांच भाग), बोसकी की गप्पे, बोसकी के ब्राम्हण, बोसकी के धनवान, इक चूरन सम्पूरन , झुठ के जल गए दोनो पाँव, गधा , उफ बडा ही गधा है, हाथ लगी हलवे की हाँडी, टेकडे-टूकडे जोड के, बोसकी की सुनाली इन कविताओं के माध्यम से गुलज़ार साहब ने बच्चों को अच्छा संदेश मिल सके और हर बातों की जानकारी देने का प्रयास किया है |

बाल कथा - जादुई खिडकी के इस बाल कथा के माध्यम से यह संदेश दिया है कि अच्छे दोस्तो के साथ रहो वे हमेशा मदत करेंगे |

बाल नाटक - पिनो कियो नामक नाटक में एक गेपटो नाम का कारपेंटर हैं जिस दंतकंथा में प्रसिध्द नटखट कठपुतली बनाई थी जिसका नाम 'पिनो कियो' यह दंतकथा का विषय लिया है |

पोटली बाबा के पास है , पोटली भर रंग बिरंगी कहानियाँ इन्हें ढूँढ लाये है गुलज़ार खास आपको सुनाने के लिये, इनमें इच्छा पुरी करनेवाला फकीर है, बोलनेवाले उल्लू है, आलसी भंगू है और भयानक भुत भी है जो मंगु के पिछे पडा है | और अल्लाद्दिन का चिराग है, अली बाबा चालीस चोर जैसी बहोत सारी कहानियाँ है |

कविता संग्रह - समय का खटोला , कविताऐं एक बूँद चाँद , रात चाँद और में , रात पश्मीने की , खराशें , रावीपार , लघु कथा , चौरस रात गुलज़ार ने अनेक

कविताएँ लिखी हैं बच्चों के लिए लिखी है | कविता संग्रह भी उन्होंने लिखे है | समय का खटोला लघुकथा - जैसे चौरस रात, उसके साथ ही फिल्मी गीतों के भी कविता संग्रह लिखे है - छैया-छैया , मेरा कुछ सामान

बालगीत फिल्में बालगीत भी लिखे है | मासूम नामक फिल्म में बहुत चर्चीत गीत है जिसके बोली है लडकी की काठी , मकडी ओ पापडवाले पंगा न ले, द जंगल बुक चड्डी पहन के फूल खिला है | यह गीत बच्चे आज भी गुन-गुनाते है | आदि साहित्य लिखा है, साथ ही उन्होंने बच्चों के लिए फिल्मों में भी योगदान दिया है |

गुलज़ार के गीत अपने दौर की कहानी कहते हुए स्थायी से अंतरे की और बढते है | युवापन उनकी रचनाओं में हरदम मौजूद रहता है | गुलज़ार के साहित्य में उन्होंने रात को बेहद अहम मानते है | गुलज़ार शब्दों को ऐसे बोल देते हैं मानो वे अभी भी मैकेनिक हे जौ जानता है कि एक्सीडेंटल कार को किन किन मात्रा में कितना रंगो का मिश्रण करने से गाडी अच्छी दिखती है उसी प्रकार वे अपने साहित्य में करते है |

आदि बातों का इस अध्याय में अनुशीलन किया जाएगा |

षष्ठम अध्याय

गुलज़ार के बालसाहित्य की भाषाशैली

इस अध्याय में हम गुलजार के बालसाहित्य की भाषाशैली का विश्लेषण किया जाएगा | गुलज़ार के हिंदी बाल साहित्य की भाषिक विशेषताओं को रेखांकीत करने का प्रयास किया जाएगा | गुलज़ार हिंदी साहित्य में जानेमाने गीतकार है | गुलज़ार त्रिवेणी छन्द के सृजक हैं | गुलज़ार मुलतः उर्दु और पंजाबी के कवि है लेकिन फिल्मों के कई गानों में उन्होंने उत्तरी भारत की कई भाषाओं का प्रयोग किया है | हिन्दी के अलावा उन्होंने पंजाबी मारवाडी, भोजपुरी जैसी अन्य भारतीय भाषाओं में अपनी लेखनी चलाई है और उन्होंने बच्चों के लिए अद्वैत रचनाएँ की है |

गुलज़ार ने बालसाहित्य की भाषा का कथा व चरित्रों के काल से सम्बन्ध बताया है | भाषा शैली में रोचकता और सहजता दिखाई देती है | इसका अध्ययन इस अध्याय में किया जाएगा |

सप्तम अध्याय

उपसंहार

इस अध्याय में उपर्युक्त समग्र अध्यायों का निष्कर्ष रुप में विश्लेषण किया जाएगा | गुलज़ार के संबंध में कहा जा सकता है कि वे हमेशा ही बालमन को समझकर उसे जानकर बाल साहित्य लिखते रहे है | बालक की उम्र, विषय पसंद के हिसाब से बालक को आकर्षित करनेवाला बाल साहित्य लिखा गया | क्योंकि वे चाहते हैं कि बालक को मनोरंजन के साथ साथ उसका उपयोग नीजि जिंदगी में हो |

वर्तमान समय में बालक और बाल साहित्य की उपेक्षा हो रही है | आज सबसे अधिक जरुरत अच्छे बाल साहित्य की है |

प्रस्तुत शोध कार्य में गुलज़ार के समग्र बालसाहित्य का अनुशीलन किया जाएगा |

सहाय्यक ग्रंथ सूची

अ.क्र.	लेखक का नाम	पुस्तक और प्रकाशन
१	डॉ. ओमप्रकाश सिंहल	हिंदी बालसाहित्य परम्परा और प्रयोग, अनुराग प्रकाशन नई दिल्ली
२	गुलज़ार	छैंया छैंया राधाकृष्ण प्रकाशन, दरियागंज
३	गुलज़ार	मेरा कुछ सामान गीत संग्रह राधाकृष्ण प्रकाशन, दरियागंज
४	प्रकाश मनू	हिंदी बाल साहित्य का इतिहास प्रभात प्रकाशन
५	प्रकाश मनु	हिंदी बालसाहित्यः नई चुनौतियाँ और संभावनाएँ कृतिका बुक्स दिल्ली.
६	डॉ. एन.एम. डोडिया	अनुसंधान प्रविधि एवं प्रक्रिया | पैराडाइज पब्लिशर्स झोअवाडा जयपूर |
७	गुलज़ार	अल्लाद्दिन का चिराग स्कुलास्टीक इंडिया
८	गुलज़ार	बोस्की की सुनाली स्कुलास्टीक इंडिया
९	गुलज़ार	पोटली बाबा की कहानी स्कुलास्टीक इंडिया
१०	गुलज़ार	पिनो किनो स्कुलास्टीक प्रकाशन
११	गुलज़ार	बोस्की पंचतंत्र स्कुलास्टीक इंडिया प्रकाशन
१२	गुलज़ार	समय का खटोला हरपरकोलिन्स प्रकाशन

शोध निदेशक — **डॉ. मुकुंद कवडे**

शोध कर्ता — **क्रांती नारायण सपाटे**